कर्मयोग (कर्मके माध्यमसे ईश्वरप्राप्ति) : खण्ड ६

सकाम कर्म, निष्काम कर्म, कर्मफलत्याग एवं अकर्म कर्म

हिन्दी (Hindi)

संकलनकर्ता

हिन्दू राष्ट्र-स्थापनाके उद्घोषक

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. जयंत बाळाजी आठवले

एवं पू. संदीप गजानन आळशी

सनातन संस्था

卐 **सनातनके ग्रन्थोंकी भारतकी भाषाओंके अनुसार संख्या** 卐

मराठी ३४५, अंग्रेजी २०१, कन्नड १९९, हिन्दी १९५, गुजराती ६८, तेलुगु ५४, तमिल ४४, बांग्ला ३०, मलयालम २४, ओडिया २२, पंजाबी १३, नेपाली ३ एवं असमिया २

अगस्त २०२४ तक ३६६ ग्रन्थोंकी १३ भाषाओंमें ९७ लाख ३३ सहस्र प्रतियां !

ग्रन्थके संकलनकर्ताओंका परिचय

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. जयंत आठवलेजी के अद्वितीय कार्यका संक्षिप्त परिचय

१. अध्यात्मप्रसारार्थ 'सनातन संस्था' की स्थापना

२. शीघ्र ईश्वरप्राप्तिके लिए 'गुरुकृपायोग' साधनामार्गकी निर्मिति : गुरुकृपायोगानुसार साधना से २६.७.२०२४ तक १२८ साधकोंको सन्तत्व प्राप्त तथा १,०४० साधक सन्तत्वकी दिशामें अग्रसर हैं ।

३. देवता, साधना, राष्ट्ररचना, धर्मरक्षा आदि विषयोंपर विपुल ग्रन्थ-निर्मिति

४. हिन्दुत्वनिष्ठ नियतकालिक 'सनातन प्रभात'के संस्थापक-संपादक

५. धर्माधिष्ठित हिन्दू राष्ट्रकी (ईश्वरीय राज्यकी) स्थापनाका उद्घोष (वर्ष १९९८)

६. 'हिन्दू राष्ट्र'की स्थापना हेतु सन्त, सम्प्रदाय, हिन्दुत्वनिष्ठ आदि का संगठन एवं उन्हें आध्यात्मिक स्तरपर दिशादर्शन !

७. भारतीय संस्कृतिके वैश्विक प्रसार हेतु 'भारत गौरव पुरस्कार' देकर फ्रान्स के संसदमें सम्मान (५ जून २०२४)

(सम्पूर्ण परिचय हेतु पढें – www.Sanatan.org)

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. आठवलेजी का साधकों को आश्वासन !

स्थूल देहको है स्थल कालकी मर्यादा ।
कैसे रहूं सदा सभीके साथ ॥
सनातन धर्म मेरा नित्य रूप ।
इस रूपमें सर्वत्र मैं हूं सदा ॥ - जयंत आठवले
१८.५.१९९६

पू. संदीप गजानन आळशीजीका परिचय

सनातनकी ग्रन्थ-रचना की सेवा करनेके साथ ही राष्ट्रजागृति एवं धर्मप्रसार करनेवाली प्रसारसामग्रीके (सनातन पंचांग, धर्मशिक्षा फलक इत्यादि के) लिए लेखन करते हैं । साधना, राष्ट्र एवं धर्म सम्बन्धी नियतकालिक 'सनातन प्रभात'में प्रबोधनपरक लेखन भी करते हैं ।

अनुक्रमणिका

(कुछ विशेषतापूर्ण सूत्र [मुद्दे] '*' चिह्नसे दर्शाए हैं ।)

१. कर्म एवं कर्मके परिणाम ११

१ ई. संचित एवं प्रारब्ध की निर्मिति

२. कर्मफल १४

२ इ. पापकर्म एवं पुण्यकर्मोंके अनुसार मिलनेवाले फल १६

२ ई. पाप-पुण्यकी मात्रानुसार मृत्युपरान्तकी गति १७

२ ए. त्रिगुणानुसार मिलनेवाला कर्मफल २०

२ अं. कर्मफलकी अवधिनुसार कर्मके प्रकार २५

३. सकाम कर्म ३५

४. निष्काम कर्म, कर्मफलत्याग एवं अकर्म कर्म की संज्ञाओंके विषयमें सम्भ्रम ३६

५. निष्काम कर्म ३७

६. कर्मफलत्याग ४६

७. अकर्म कर्म (ज्ञानोत्तर कर्म) ४८

७ आ. कर्म 'अकर्म-कर्म' होने सम्बन्धी विवेचन ४८

७ इ. अकर्म कर्मका महत्त्व एवं लाभ ५०
७ उ. झूठ बोलनेके पापका अकर्म कर्म होना ५६
८. कर्मयोगान्तर्गत चरण ६०
卐 'निष्काम कर्म'सम्बन्धी गहन ज्ञान ६३
卐 संकलनकर्ताओंका वैज्ञानिक दृष्टिकोण एवं अन्य जानकारी ६४

टिप्पणी १. विषय पूर्ण होनेकी दृष्टिसे ग्रन्थमें अन्य सन्दर्भग्रन्थोंसे तथा लेखन से कुछ सूत्र लिए हैं । ऐसे सूत्रोंके अन्तमें कोष्ठकमें छोटे आकारमें सन्दर्भ क्रमांक लिखा गया है । उसका विवरण ग्रन्थके अन्तमें 'सन्दर्भसूची'में दिया गया है ।

२. कुछ सूत्रोंके अन्तमें लिखा है – 'सन्दर्भ : अज्ञात' । ये सूत्र विविध धार्मिक ग्रन्थ, सन्त अथवा अध्यात्मके अधिकारी व्यक्तियोंके नियतकालिक आदि से लिए हैं । ऐसे सूत्रोंका सन्दर्भ पाठकोंको ज्ञात हो तो हमें सूचित करें।

परात्पर गुरु डॉ. जयंत आठवलेजीकी उपाधिसम्बन्धी विवेचन !

महान महर्षियोंने सहस्रों वर्ष पहले नाडीपट्टिकाओंमें भविष्य लिख रखा है। इन जीवनाडी-पट्टिकाओंके वाचनके माध्यमसे महर्षि सनातन संस्थाका मार्गदर्शन करते हैं । '१३.७.२०२२ से 'सप्तर्षि जीवनाडी-पट्टिका'के वाचन के माध्यमसे सप्तर्षिकी आज्ञा अनुसार परात्पर गुरु डॉ. जयंत आठवलेजीको 'सच्चिदानंद परब्रह्म' सम्बोधित किया जा रहा है । तब भी, इससे पहलेके लेखनमें या अब भी साधकोंद्वारा दिए लेखनमें उन्होंने 'प.पू.' या 'परात्पर गुरु' की उपाधियोंसे सम्बोधित किया हो, तो उसमें परिवर्तन नहीं किया गया है ।

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. आठवलेजीकी उत्तराधिकारिणियोंकी उपाधिसम्बन्धी विवेचन !

जीवनाडी-पट्टिका वाचनद्वारा सप्तर्षिने की आज्ञाके अनुसार १३.५.२०२० से सद्गुरु (श्रीमती) बिंदा नीलेश सिंगबाळजीको 'श्रीसत्शक्ति' एवं सद्गुरु (श्रीमती) अंजली गाडगीळजीको 'श्रीचित्शक्ति' सम्बोधित किया जा रहा है ।

भूमिका

देहमें प्राण रहनेतक मनुष्यद्वारा कर्म होते ही हैं; किंबहुना उसे कर्म करने ही पडते हैं । अच्छे-बुरे कर्मोंका फल मनुष्यको मिलता ही है । कर्मयोगका आचरण करनेवाले मोक्षार्थीको कर्म इस प्रकार करने पडते हैं कि उसका फल ही न मिले; क्योंकि ऐसा कर्म कर्मफलके बन्धनमें नहीं अटकाता । ऐसे कर्म चरण-दर-चरण कैसे कर सकते हैं, इसका दिशानिर्देशन इस ग्रन्थमें किया है ।

कर्मका प्रथम चरण है 'सकाम कर्म' । व्यावहारिक इच्छा, अपेक्षा, भावना आदि के कारण सामान्य मनुष्यद्वारा सकाम कर्म ही अधिक होते हैं। उपासकद्वारा भी प्रारम्भमें सकाम उपासना ही होती है । सकाम कर्मके कारण पाप अथवा पुण्य प्राप्त होता है एवं मनुष्य कर्मबन्धनमें अटकता है। सकाम कर्म करते हुए धीरे-धीरे कर्तापनकी भावना तथा फलकी अपेक्षा घटती जाती है एवं 'निष्काम कर्म' करना सम्भव होता है । यह कर्मका दूसरा चरण है । निष्काम कर्म दो प्रकारके होते हैं - मायाके निष्काम कर्म एवं अध्यात्मके निष्काम कर्म । मायाके निष्काम कर्मके कारण, उदा. जिसे आवश्यकता हो उसे दान देनेसे, पुण्य प्राप्त होता है ।

इसके विपरीत अध्यात्मके निष्काम कर्म मोक्षसाधनाके लिए किए जानेके कारण उनके द्वारा आध्यात्मिक उन्नति होकर पाप-पुण्यसे परे जा सकते हैं । मनुष्यको मायाके कर्म तो निरन्तर करने ही पडते हैं; ऐसेमें निष्काम भाव होनेपर भी वह इस पाप-पुण्यसे परे किस प्रकार जाए ? इसका उपचार है 'कर्मफलत्याग' करना, अर्थात कर्मका फल ईश्वरके चरणोंमें अर्पित करना । यह कर्मका तीसरा चरण है । यदि हम कर्म ही ऐसा करें, जिनकी कर्ममें गणना न हो, तो उस कर्मका फल मिलने तथा उस फलका त्याग करनेका प्रश्न ही कहां उठता है ? ऐसा कर्म करनेपर भी न करने समान है । इसे ही 'अकर्म-कर्म' कहते हैं । यह कर्मका चौथा चरण है । यहां विशेषरूपसे ध्यान देनेयोग्य बिन्दु यह है कि नामधारक

का नामजप अखण्ड होनेपर, वह सकाम कर्मसे सीधे अकर्म कर्ममें पहुंच सकता है ।

इस ग्रन्थमें दिए गए कर्मके चरण समझकर उनके अनुसार आचरण करनेवाला शीघ्र कर्मबन्धनसे मुक्त हो, अर्थात उसे मोक्षप्राप्ति हो, यही श्रीगुरुचरणोंमें प्रार्थना है । – **संकलनकर्ता**

संस्कृत भाषानुरूप हिन्दी भाषाके प्रयोग हेतु सनातनकी समर्थक भूमिका !

हिन्दी भाषामें उर्दूकी भांति कुछ शब्दोंके नीचे बिन्दु (नुक्ता) लगाते हैं, उदा. हज़ार, जोड़, गाढ़ । इससे उसकी सात्त्विकता घट जाती है । संस्कृत भाषा देवभाषा है । सनातन संस्था उसे आदर्श मानकर, ग्रन्थोंमें शब्दोंके नीचे बिन्दु नहीं लगाती तथा कारकचिन्ह जोडती है । वर्तमान कालका उदाहरण लें, तो अंग्रेजी भाषामें भी बिन्दुका प्रयोग नहीं किया जाता; तथापि पूरे संसारमें इस भाषाके प्रयोगमें कोई बाधा नहीं आती ।

''कारकचिन्हको धातुसे जोडना ही उचित है ! संस्कृतमें 'रामस्य धनुष्यः' लिखते हैं । इसलिए 'रामका धनुष' ही उचित है । 'राम का धनुष' लिखनेका अर्थ है, रामको धनुषसे अलग करना ! रामका धनुष उनके साथ ही होना चाहिए !''

– डॉ. लालचंद तिवारी, एक प्रमुख अधिकारी, 'गीता प्रेस' गोरखपुर

संस्कृत भाषासमान हिन्दीका प्रयोग करना अर्थात 'चैतन्यकी ओर अग्रसर होना' । प्रत्येक व्यक्तिको इसका आचरण कर 'स्व-भाषा' रक्षार्थ अर्थात धर्मरक्षाके कार्यमें सहभागी होकर अपना धर्मकर्तव्य निभाना चाहिए !

– (परात्पर गुरु) डॉ. जयंत बाळाजी आठवले